एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मटर के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबन्धन

(*देवेश परमार एवं लक्ष्मण सिंह सैनी)
[1]राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)
[2]श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: 0909deveshparmar@gmail.com

दलहनी सब्जीयों में मटर का महत्वपुर्ण स्थान है। मटर को रबी के मौसम में उगाया जाता हैं। मटर की खेती जहाँ एक ओर कम समय में अधिक पैदावार देती हैं वही दुसरी ओर मृदा की उर्वरा शक्ती को बढ़ाती है। फसल चक्र के अनुसार खेती की जाये तो मृदा की उर्वरकता के साथ–साथ विभिन्न कीटो के प्रकोप से भी बचा जा सकता है। अक्टुबर व नवम्बर महीने में अगेती किस्मो की बुआई करके अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। मटर का प्रयोग डिब्बाबन्दी मे कर सकते है साथ ही मटर को सुखाकर दाल के रुप मे व बैमौसम मे बेच कर अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मटर मे पर्याप्त मात्रा में आयरन, जिंक, मैग्नीज और कॉपर के साथ–साथ विभिन्न विटामिन जैसे ।, ठ$_1$, ठ$_6$, ब और ज्ञ इत्यादी पाये जाते है। मटर में प्रोटीन 22.5 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 62 प्रतिशत और वसा 1.8 ग्राम पायी जाती है। हरी मटर में एन्टी ऑक्सीडेन्ट पाये जाते है जो रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते है। भारत में सर्वोधिक मटर उत्पादन उत्तर प्रदेश में जो देश के कुल उत्पादन का 60 प्रतिशत है तथा दुसरा स्थान मध्य प्रदेश का है। मटर की अच्छी पैदावार लेने के लिये मृदा में उपस्थित पौषक तत्वो की जाँच करवा कर उचित मात्रा में उर्वरको का प्रयोग कर अच्छा उत्पादन ले सकते हैं। साथ ही अच्छा उत्पादन लेने के लिये कीट नियंत्रण अति आवश्यक है वैसे तो मटर की फसल पर अनेक कीटो का आक्रमण होता है परन्तु कुछ कीट ऐसे होते है जो मटर की फसल को सर्वोधिक नुकसान पहुँचाते है। समय पर इन कीटो की रोकथाम नही करने पर काफी नुकसान हो जाता है।

मटर के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबन्धन

1. तना मक्खी- यह कीट छोटे व काले रंग का होता है इस कीट की मादा पौधे के कोमल तने व शाखाओं मे छेद करके उसमे अण्डे दे देती है। अण्डे से 2 से 4 दिन मे सुण्डी निकलती है जिसे मैगट कहते है। इस कीट का आक्रमण फसल की अगेती बुआई करने पर होता है। बीज अंकुरण की आरंभिक अवस्था मे यह कीट गंभीर रुप धारण कर लता है। इस कीट की सुण्डी आन्तरिक ऊतक को नुकसान पहुँचाती है जिसके फलस्वरुप पुरा पौधा नष्ट हो जाता है। इस कीट से ग्रसित पौधो के तनो मे दरारे पड़ जाती है। पौधो की पत्तियों पर सफेद रंग की धारिया दिखाई देना। इस कीट के आक्रमण का सकेंत देती है।

नियंत्रण के उपाय

1.गर्मियों में गहरी जुताई करनी चाहिए। जिससे मृदा में उपस्थित प्यूपा को नष्ट कीया जा सकता हैं।
2.फसल की बुआई अक्टुबर के अन्तिम सप्ताह में करनी चाहिए। ताकी इस कीट के प्रकोप से फसल को बचाया जा सकता है।
3.इस कीट से प्रभावित पौधो को उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
4.अच्छी तरह से सड़ी हुई जैविक खाद का प्रयोग करना चाहिए।
5.नीम आधारित कीटनाशी जैसे NSKE 5 प्रतिशत का छीड़काव करना चाहिए।
7.मोनोक्रोटोफोस 36 SL 1 मिलीलीटर पर लीटर पानी के साथ 15 दिन के अन्तराल पर छीड़काव करना चाहिए।

8.ईमिडाक्लोरप्रिड 17.5 SL 0.5 मिलीलीटर पर लीटर पानी के हिसाब से छीड़काव करना चाहिए।

2. फली छेदक कीट- इस कीट की सुण्डी हरे रंग तथा 3 से 5 से.मी. लम्बी होती है। यह एक बहुभक्षी कीट होता है। इसकी सुण्डी फली में छेद करके दाने को विकसित होने से पुर्व ही नष्ट कर देती हैं। एक सुण्डी लगभग 30 से 40 फलीयों को नुकसान पहुँचाती है। इससे फलीया बदरंगी हो जाती है तथा फलीयों से गन्द आने लग जाती हैं।

नियंत्रण के उपाय

1.फसल की बुआई अक्टुबर–नवम्बर महीने में कर लेनी चाहिए।
2.मृदा मे उपस्थित प्यूपा को नष्ट करने के लिये गर्मियों में गहरी जुताई करनी चाहिए।
3.प्रकाश प्रपंच को खेतो मे स्थापित करके वयस्क कीटो को मारने के लिये आकर्षित कर उन्हे नष्ट कर देना चाहिए।
4.मुख्य फसल के चारो तरफ फाँस फसल जैसे गेंदा इत्यादी लगा कर मुख्य फसल को कीटो से बचाया जा सकता हैं।
5.10 से 12 फीरोमोन प्रपंच प्रति हेक्टयर की दर से स्थापित करना चाहिए।
6.फली छेदक से बचाव के लिये *NPV* 250 LE पर हेक्टयर की दर से छीड़काव करना चाहिए।
7.इस कीट का अधिक प्रकोप होने पर मित्र कीट की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए। रासायनिक कीटनाशी जैसे मेलाथियॉन 50 ई.सी. 1.5 मिलीलीटर और ईमामेक्टीन बेन्जोइड 1 मिलीलीटर पर लीटर पानी के साथ छीड़काव करना चाहिए।

3. मोयला/एफिड- इस कीट का शिशु एवं वयस्क दोनों अवस्था फसल को नुकसान पहुँचाती है। जो पौधो के विभिन्न कोमल भाग जैसे तना व पत्तिया इत्यादि का रस चुसकर पौधो को कमजोर कर देते है। तथा प्रभावित पौधे पर काले–काले धब्बे दिखाई देने लगते हैं। जो फसल की पैदावार को प्रभावित करते हैं।

नियंत्रण के उपाय

1.नत्रजन युक्त उर्वरको का प्रयोग उचित मात्रा मे करना चाहिए। जिससे कीटो का आक्रमण कम होता हैं।
2.इस कीट से प्रभावित पौधो को उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
3.इसके नियंत्रण हेतु 10 से 12 पीला स्ट्रीकी प्रपंच प्रति हेक्टेयर, पौधे से 1 से 1.5 फिट की उचाई पर स्थापित करना चाहिए।
4.डाइमेथोइड 30 ई.सी. 1 मिलीलीटर और मेलाथियॉन 50 ई.सी. 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के साथ छीड़काव करना चाहिए।
5.इमिडाक्लोरप्रिड 17.5 SL 0.4 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के साथ छीड़ाकाव करना चाहिए।

4. पत्ती लपेट कीट- इस कीट का प्रकोप पौधो की बढ़वार के समय अधिक देखने को मिलता है। यह कीट फसल के लिये अधिक नुकसान दायक होता हैं। यह कीट पत्तियों में टेड़ी–मेड़ी सुरंग बनाकर, पत्तियों के हरे भाग को खाता हैं। इस प्रकार इस कीट की सुण्डी सुरंग के अन्दर ही प्युपा में बदल जाती हैं। इससे प्रभावित पौधे मुरझाकर सुख जाते हैं। जिससे उपज में काफी कमी आती हैं।

नियंत्रण के उपाय

1.नत्रजन युक्त उर्वरको का प्रयोग उचित मात्रा मे करना चाहिए।
2.प्रभावित पौधो को उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
3.इस कीट का अधिक प्रकोप होने पर मित्र कीट की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए। रासायनिक कीटनाशी जैसे–इमिडाक्लोरप्रिड 17.8 SL 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के साथ छीड़ाकाव करना चाहिए।
4.डेल्टामेथ्रिन 2.8: ई.सी. 1 मिलीलीटर पर लीटर पानी के साथ छीड़ाकाव करना चाहिए।
5.क्युनॉलफोस 25 ई.सी. 1 मिलीलीटर पर लीटर पानी के साथ छीड़ाकाव करना चाहिए।